अध्याय-पंचम

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पंचम

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.0 भूमिका –

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, शिक्षा के उद्देश्य देशकाल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते है, जो समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के पूरक होते है। विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है। क्योंकि संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग को चयन करने और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सके। वस्तुतः उच्चतम विकल्प के चुनाव की प्रकिया ही मूल्य प्रक्रिया हैं। इस मूल्य प्रकिया चयनकर्ता बुद्धि, योग्यता, रूचि शैक्षिक स्तर एवं अभिवृत्ति की अहंम भूमिका रहती है, जिसके आधार पर वह अपने जीवन को विकासोन्मुख एवं समाजोपयोगी बनाने में सक्षम होता है। बालक एवं बालिकाओं में विकसित करने के लिए शिक्षकों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

5.1 संक्षेपिका –

संपूर्ण लघुशोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया हैं। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में शोध संबधित साहित्य का अध्याय, तृतीय अध्ययन में समस्या, प्रविधि एवं प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या तथा पंचम अध्याय में शोधसार निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अंत में संदर्भ ग्रंथ एवं परिशिष्ट में

उपयोग किये गये उपकरणों को लिया गया हैं। अध्यायवार संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है–

प्रथम अध्याय में प्रस्तावना, वैदिक, बौद्ध, मुस्लिम, ब्रिटिश काल में शिक्षक का स्थान और शिक्षा का महत्व, प्राचीन काल और आधुनिक काल में शिक्षा में बदलाव, शिक्षक और अध्यापन व्यवसाय, शिक्षक अभिवृत्ति, समस्या का कथन, शोधकार्य में प्रयुक्त शब्दावली व अर्थ, शोध के चर प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता, समस्या का सीमांकन शोध के उद्देश्य, शोधकार्य की परिकल्पनाऐं, इसकी महती दी गई हैं।

द्वितीय अध्याय में शिक्षकों को शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति इससे संबंधित पूर्व अध्ययनों की जानकारी दी गई है।

तृतीय अध्याय में शोध का शीर्षक शोध के अध्ययन में समस्या का कथन, न्यादर्श का चयन, शोध के चर, लघुशोध संबंधी उपकरण, प्रदत्तो का सारणीयन, प्रदत्तों के संकलन में उत्पन्न कठिनाईयाँ, प्रयुक्त सांख्यिकी आदि की जानकारी दी गई हैं।

5.2 शोध का शीर्षक–

"बी.एड़ शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयों की सामाजिक सांस्कृतिक रूपरेखा एवं अध्यपन अभिवृत्ति के मध्य संबंध का अध्ययन"

5.3 शोध के उद्देश्य –

1. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा कें संदर्भ में लिंग, स्थान, जाति इसका शिक्षा में परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों के अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा व अध्यापन अभिवृत्ति के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

5.4 शोध कार्य की परिकल्पनाएँ–

1. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में स्त्रीयों की सहभागिताएँ बढ़ रही हैं।
2. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में कनिष्ठ जाति के शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की सहभागिताएँ बढ़ रही हैं।
3. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सहभागिताएं बढ़ रही हैं।
4. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में लिंग के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर हैं।
5. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में भौगौलिक क्षेत्र के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं हैं।
6. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में जाति के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं हैं।
7. शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में शासकीय और अशासकीय महाविद्यालय के प्रकार के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

5.5 शोध के चर – \0

विश्लेषण की सुविधानुसार चरो को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया हैं।

- **स्वतंत्र चर–**

1. लिंग
2. क्षेत्र
3. जाति

- **आश्रित चर-** 10

  अभिवृत्ति

5.6 शोध समस्या की सीमाएँ-

शोध समस्या को निम्न सीमाओं तक केन्द्रित रखा गया-

1. किसी का सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा का अध्ययन करना कठिन और मुश्किल काम होता है, लेकिन इस अनुसंधान के द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा का अध्ययन लिंग, क्षेत्र,जाति के आधार पर किया हैं।
2. मनुष्य की अभिवृत्ति कब बदल जाये ये कोई भी नहीं बता सकता लेकिन इस अनुसंधान में हम डॉ.एस.पी. अहलूवालिया अभिवृत्ति सूची के द्वारा अभिवृत्ति का अध्ययन करेंगे। यह भी इस अनुसंधान का सीमांकन हैं।
3. महाराष्ट्र के सभी जिले में बी.एड्. महाविद्यालय है, परन्तु शोधकर्ता ने सिर्फ अहमदनगर जिले के दो महाविद्यालय का चयन किया हैं। इसमें एक शासकीय और दूसरा अशासकीय महाविद्यालय हैं।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने दो महाविद्यालयों का छः साल के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को लिया हैं।
5. अध्यापन-अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने सिर्फ 2008-2009 साल में पढ़ रहें शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया हैं।

5.7 न्यादर्श चयन प्रक्रिया-

सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा का अध्ययन करने के लिए छः साल के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को लिया है। उसमें 1140 शिक्षक

प्रशिक्षणार्थी हैं। शासकीय महाविद्यालय के 480 और अशासकीय महाविद्यालय के 560 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी हैं।

5.8 प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी–

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, और "टी" अनुपात का उपयोग किया हैं।

चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। शोध के उद्देश्य के आधार पर शून्य परिकल्पनाओ की सार्थकता का अध्ययन किया गया हैं। प्रदत्तों के विश्लेषण की तालिका क्रमांक 5.1 में दर्शाया गया हैं।

तालिका क्रमांक 5.1 प्रदत्तों का विश्लेषण

परिकल्पना क्र.	तालिका क्र.	प्रयुक्त सांख्यिकी	प्राप्त परिणाम	प्राप्त निष्कर्ष
4	4.4	'टी' मान	1.66	NS
5	4.5	'टी' मान	2.19	NS
6	4.6	'टी' मान	0.43	NS
7	4.7	'टी' मान	0.09	NS

परिकल्पना कमांक – 4,6 और 7 के लिए सार्थकता स्तर– 0.05

परिकल्पना कमांक – 5 के लिए सार्थकता स्तर – 0.02

5.9 निष्कर्ष एवं सुझाव –

- बी.एड्. महाविद्यालय में पुरूषों की तुलना में स्त्रीयों की सहभागिता बढ़ रही हैं। पुरूषों की अभिवृत्ति शिक्षक व्यवसाय के प्रति कम हो रही है, और उनकी अभिवृत्ति दूसरे व्यवसाय के प्रति बढ़ रही हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में स्त्री शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सहभागिता बढ़ रही हैं।

- बी.एड़ महाविद्यालय में वरिष्ठ जाति की तुलना में कनिष्ठ जाति के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संख्या बढ़ रही हैं। वरिष्ठ जाति के लोग अभी दूसरे व्यवसाय के प्रति आकर्षित हुए जा रहे हैं, इसलिए बी.एड्. ने उनकी सहभागिता कम होती जा रही हैं। इसकी तुलना में कनिष्ठ जाति की सहभागिता बढ़ रहीं है।
- शहरी क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों की संख्या बी.एड़ महाविद्यालय में बढ़ रही हैं। शहरी क्षेत्र में शिक्षा का विकास होने के कारण शहरी क्षेत्र के छात्र इंजिनियर, डॉक्टर, कम्प्यूटर की तरफ आकर्षित होते है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों की तुलना में इस क्षेत्र में कम पड़ जाते है। इसीलिए ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पास दूसरा कोई विकल्प न होने के कारण शिक्षक व्यवसाय में ज्यादा आते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र की सहभागिताएं बढ़ रही हैं।
- बी.एड़ महाविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिंग का अध्यापन-अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया । इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में लिंग के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं हैं।
- इस अनुसंधान में जाति के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में कोई प्रभाव नहीं पाया गया। वरिष्ठ जाति और कनिष्ठ जाति का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।
- ग्रामीण और शहरी शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। इसका अर्थ यह हुआ की भौगोलिक क्षेत्र का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसमें कोई अंतर नहीं है।

- शासकीय और अशासकीय महाविद्यालय का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। इसका अर्थ यह हुआ कि शासकीय और अशासकीय महाविद्यालय में अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं हैं।

सुझाव –

- शिक्षकों को अपने व्यवसाय में आस्था, निष्ठा एवं लगन होनी चाहिए। तभी वह विद्यार्थियों एवं समाज के प्रति अपने विविध दायित्वों को पूर्ण कर सकेंगा।
- शिक्षण व्यवसाय में अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग, क्षेत्र,जाति इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इसीलिए इस व्यवसाय में सबकों आना चाहिए। और व्यवसाय को एक ऊँचें मुकाम तक पहुँचाना चाहिए।
- छात्र एवं छात्राओं में शील, शक्ति एवं सौन्दर्य गुणों को विकसित करना शिक्षक पर निर्भर हैं। सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् गुणों को उन्हें स्वयं में संग्रहित करना चाहिए।
- स्कूल में शिक्षा संबंधित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये, जैसे– वाद–विवाद,प्रतियोगिता, वक्तृत्व स्पर्धा, स्नेहसम्मेलन, निबंध लेखन स्पर्धा आदि।

5.10 भावी शोध हेतु सुझाव –

- सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा का अध्ययन करने के लिए 10 या उससे ज्यादा साल के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को लिया जा सकता हैं।
- सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा का अध्ययन करने के लिए दो से अधिक महाविद्यालय का उपयोग किया जा सकता है।

- अध्यापन–अभिवृत्ति देखने के लिए शिक्षक–प्रशिक्षाणार्थी ज्यादा लिये जा सकते हे।
- डी.एड तथा बी.एड्. शिक्षक प्रशिक्षाणार्थियों का सामाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा एवं अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।